'Uniresearch'- International Multidisciplinary E-Research Journal
UGC Approved List No. 63005 Impact Factor - 3.020
Vol. 10 Issue. 1
ISSN 2321-4953 (Online)
January - 2018

हिन्दी साहित्य में चित्रित आदिवासी संस्कृति एवं जीवनदर्शन

डॉ. जे. वाय. इंगळे
हिंदी विभागाध्यक्ष, म.स.गा. महाविद्यालय, मालेगाव कॅम्प, जि. नाशिक

प्रा. श्रीमती. योगिता विष्णुपंत उशिर
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
मनमाड, ता. नांदगाव जि. नाशिक

प्रस्तावना :-

संस्कृति और साहित्य के बीच हमेशा से ही गहरा संबंध रहा है । किसी भी प्रदेश की पहचान वहाँ की संस्कृती से होती है। संस्कृति एक विचारधारा है । संस्कृती में मनुष्य के आचार-विचार रहन सहन, ज्ञान-विज्ञान, साहित्य कला, परंपरागत अनुभव जीवन गुजारने की पद्धति आदि संस्कार प्रभावी है । आज वैश्वीकरण की आँधी ने पूरी दुनिया को ही एक बडे बाजार में ढाल दिया है । इस बाजार ने विकास वाद के नाम पर जंगलो पर कब्जा किया है। इन जंगलो मे रहने वाले आदिवासियों को अपने ही जल, जंगल और जमीन से बेदखल होना पडा । विश्व की अतिप्राचीन संस्कृती आदिवासियों की मानी जाती है । लेकिन आज आदिवासियों को खुद इस भूमंडलीकरण से बचाने के लिए सामना करना पड रहा है । देश में सर्वाधिक स्वाभिमानी आदिवासी समाज की हालत सबसे खराब है। रामविलास शर्मा ने भारतीय साहित्य की भूमिका में स्वीकार किया, परंतु तुर्को, मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं की। उनके लोक-गीत (मौखिक साहित्य) में इनका उल्लेख मिलता है ।

''संस्कृति एक जीवन शैली है जिसे मनुष्य पूर्वजों से ग्रहण करता आया है । संस्कृति जहाँ एक ओर मनुष्य को जीवन जीने की एक उच्च भावभूमि प्रदान करती है, वही यह जीवन विश्व का सुरभित पुष्प भी है। किसी भी राष्ट्र के लिए संस्कृति का वही महत्व है जो शरीर के लिए आत्मा का।''

अधिकांश आदिवासी लोग आदिवासी संस्कृति के प्राथमिक धरातल पर जीवन यापन करते है, उनकी संस्कृति को सामान्यत: भारत, आफ्रिका, उत्तर और दक्षिण अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, एशिया तथा अनेक द्विपों में आज भी देखा जा सकता है । बहुत बडे भूभाग में जो लोग मुख्य धारा तथाकथित मुख्य धारा से अलग रहते है, जो अपनी जिन्दगी मध्यकालीन और आधुनिक सामाजिक प्रक्रिया से नहीं चलाते है, उन्ही लोगों को आदिवासी कहा जा सकता है।

आदिवासी समाज और संस्कृति :

आदिवासी जनजाति दुनिया की अतिप्राचीन मानी जाती है, जाहिर है उनकी संस्कृति भी अतिप्राचीन ही है। उन्हे संस्कृत ग्रंथों में 'अत्विका', 'वनवासी' जैसे शब्द मिलते है । भारतीय संविधान ने उन्हे अनुसूचित जनजातियाँ भी संबोधित किया है। भारत में संथाल, मुण्डा, हो, गोंड, खासी, भील, बोडो, सहरिया, गरासिया, मीना आदि आदिवासी समुदाय मिल जाते है। आदिवासी प्रकृति को पूजनेवाले होते है । वे अपनी संस्कृति और भाषा की रक्षा भी लगन से करते है। प्रकृति में सूर्य, पेड, पहाड, जंगल आदि की पूजा वे करते है। आज भूमंडलीकरण के साथ साथ इनके जंगल, जमीन पर प्रघात हो रहे है । आदिवासियों की लगभग ९ भाषाएँ समाप्त हो चुकी है । 'ओंगे' नामक जनजाति पूरी तरह से खत्म हो चुकी है । आज सभी आदिवासियों के अस्तित्व पर संकट आ चुका है।

आदिवासी समाज उत्सव प्रिय है। उनके समाज में उत्सव के संबंधित परंपराओं का पालन सर्वोतोपरी शीर्ष है। परिवार में पुरुष का स्थान स्त्री से उच्च है। फिर भी स्त्रियों को बहुत से अधिकार दिए जाते है, जो सभ्य समाज में भी नहीं दिए जाते। आदिवासी संस्कृति में बालविवाह, सतीप्रथा जैसी प्रथाएँ नही है, लेकिन बहुविवाह है । विवाह करते समय आदिवासी पुरुष को स्त्रियों के परिवार को मूल्य चुकाना पडता है। बल्की सभ्य समाज में ठिक इसके विपरीत है। पुरुष स्त्रियों की रक्षा करता है, क्योंकी उनकी दृष्टी में वह मौल्यवान वस्तु है। पुरुष वर्ग शिकार और कृषि जैसे श्रमवाले काम करते है और स्त्रियाँ भी जंगलो में आवश्यक वनस्पतियों द्वारा उपयोगी वस्तूएँ समेटकर लाती है । घर पर संतान का पालन-पोषण का कार्य करती है।

आदिवासी नृत्यप्रिय समाज है, नृत्यों के साथ साथ अनेक वाद्य, जैसे तबला, ढोलक, झाँझ, बासुरी आदि भी बजाते है। उत्सवों में आकर्षक, रंगबिरंगे वस्त्र तथा अनेक आभुषण पहनकर ताल-वाद्यों के साथ नृत्य करते हुए नाचते गाते है। विवाह में भी अनेक लोकगीत गाए जाते है। इनकी पीढियो दर पीढियों ने इन गीतों को जीवित रखा है। मध्यप्रदेश के बस्तर जिलें में आदिवासियों की संख्या आज भी बहुत है। उन्होंने आज भी अपने बोलियों को,

Scanned with CamScanner